Volume 1; Issue 2
April to Jun 2025

E-ISSN: 3048-8699

International Journal of History and Culture

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly International Research Journal

International Journal of History and Culture
E-ISSN: 3048-8699
https://www.journalofhistory.in/
Volume 1; Issue 2; April to Jun 2025; Page No. 5-16
Peer Review, Indexed and Refereed Journal
Received Date 31-05-2025, Accepted Date 02-06-2025

कौशाम्बी से प्राप्त देव मृण्मूर्तियों का कलात्मक अन्वेषण

डॉ0 जमील अहमद
अिसस्टेन्ट प्रोफेसर
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
ईश्वर शरण पी0जी0 कॉलेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ0प्र0

प्रियंका पटेल
शोध छात्रा
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
ईश्वर शरण पी0जी0 कॉलेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ0प्र0

सारांश

वत्स महाजनपद की राजधानी कौशाम्बी के उत्खनन एवं सर्वेक्षण से अनेक देव मृण्मूर्तियों की प्राप्ति हुई, जो अलग–अलग कालखण्डों से सन्दर्भित है। कौशाम्बी में देवमृण्मूर्ति कला का प्रारम्भ प्राक्–मौर्य काल से माना जाता है, जो आगे चलकर मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल में अपने विकास की पराकाष्ठा को सन्दर्भित करती है। इन मृण्मूर्तियों की निर्माण पद्धति व तकनीक भी विभिन्न कालों में अलग–अलग दिखाई पड़ती है। कौशाम्बी से प्राप्त देवमृण्मूर्तियों में शिव परिवार के गणेश, स्कन्द, सूर्य, कुबेर, यक्ष, नैगमेश, किन्नर, मिथुर, सपक्ष आदि प्रमुख है। कलात्मक रूप से अलंकृत इन मृण्मूर्तियों को विविध प्रसाधन एवं अलंकृत, वेशभूषा धारण किए

दिखाया गया है जो इनको लोक जीवन के पुरूष मृण्मूर्तियों से पृथक करता है। जिससे इन्हें देव रूप में स्पष्ट पहचान मिल सकी। देव मृण्मूर्तियों को विविध केश विन्यास, अलंकृत मुकुटनुमा शिरोभूषा, पगड़ियाँ, कर्णाभूषण, ग्रीवा आभूषण, हाथ पैर एवं कमर में धारण करने वाले आभूषण एवं विविध परिधानों आदि को धारण किए दिखाया गया है। इन देव मृण्मूर्तियों की प्राप्ति से कौशाम्बी में शासन करने वाले राजवंशों के समय में प्रचलित सौन्दर्य प्रसाधन सामग्रियों के साथ–साथ तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर भी महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।

मुख्य शब्द *– कौशाम्बी, देव मृण्मूर्तियाँ, कलात्मक अध्ययन, अलंकृत आभूषण सौन्दर्य प्रसाधन।*

प्रस्तावना –

भारत के प्राचीन ऐतिहासिक पुरास्थलों में कौशाम्बी का महत्वपूर्ण स्थान है। वत्स महाजनपद की राजधानी कौशाम्बी प्रयागराज से लगभग 52 किमी0 दक्षिण – पश्चिम में यमुना नदी के बायें तट पर स्थित है। इसकी पहचान सिद्ध करने हेतु कनिंघम महोदय ने 1861 ई0 में कौशाम्बी का निरीक्षण किया और 1871 में कौशाम्बी के पुरावशेषों पर एक रिपोर्ट[1] प्रस्तुत कर यह सिद्ध कर दिया कि वर्तमान कोसम इनाम व कोसम खिराज ग्राम ही प्राचीन कौशाम्बी है। एन0जी0 मजूमदार ने 1937–38 में अशोक स्तम्भ क्षेत्र के पास उत्खनन कार्य किया, परन्तु उत्खाता की आकस्मिक मृत्यु के कारण उत्खनन कार्य इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की ओर से गोवर्धन राय शर्मा व उनके सहयोगियों के द्वारा 1949–1966 तक किया।[2] जिसके फलस्वरूप यहां से मुख्यतः चार क्षेत्र[3] अशोक स्तम्भ का समीपवर्ती क्षेत्र, घोषिताराम बिहार क्षेत्र, पूर्वी द्वार के पास रक्षा प्राचीर क्षेत्र, राज प्रासाद क्षेत्र प्रकाश में आए। इन उत्खनित क्षेत्रों से अत्यधिक मात्रा में मृण्मूर्तियाँ, प्रस्तर मूर्तियाँ, मृदभाण्ड, मनके आदि प्राप्त हुए जिस पर विभिन्न प्रकार के कलात्मक अंकन उत्कीर्ण है। जिनमें मृण्मूर्तिकला का एक विशेष स्थान है।

मानचित्र– वत्स महाजनपद की राजधानी कौशांबी (आभार–विकिपीडिया)

शोध का उद्देश्य –

- कौशाम्बी से प्राप्त विभिन्न कालखण्डों के देव मृण्मूर्तियों का कलात्मक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक अध्ययन।
- कौशाम्बी से प्राप्त विभिन्न देव मृण्मूर्तियों का सविस्तार उल्लेख।
- देव मृण्मूर्तियों के निर्माण तकनीक एवं उनके विकास क्रम का अध्ययन।

वत्स महाजनपद की राजधानी कौशाम्बी के उत्खनन एवं सर्वेक्षण से अनेक देव मृण्मूर्तियों की प्राप्ति हुई, जो अलग–अलग कालखण्डों से सन्दर्भित है। धन व समय के नगण्य प्रयोग के कारण कला के विभिन्न साधनों में मृत्तिका कला का सर्वाधिक महत्व है। भारत के प्राचीनतम मृण्मूर्तियों प्राक् हड़प्पा, हड़प्पा सभ्यता, ताम्र पाषाणिक संस्कृति, ओ0सी0पी0, पी0जी0डब्ल्यू0, एन0बी0पी0डब्ल्यू0 आदि पुरास्थलों से प्राप्त है। असंख्य मृण्मूर्तियों का निर्माण पूजा सामग्री के रूप में, खिलौनों एवं सजावट की वस्तु आदि रूपों में बहुउद्देश्यीय प्रयोग हेतु रहा होगा।[4] इसके

अतिरिक्त भारत के प्राचीनतम् साहित्यिक स्त्रोतों में भी मृत्तिका कला के प्रमाण विविध रूपों में दिखाई देते हैं। महाभारत,[5] आश्वलायन ग्रह्य परिशिष्ट, काश्यप संहिता, श्रीमदभागवत् पुराण, मार्कण्डेय पुराण, भद्रसाल जातक, शुक्रनीतिसार, कथासरित्सागर, शिल्परत्न आदि ग्रन्थों में देवी – मृण्मूर्तियों के साथ–साथ देव, मृण्मूर्ति कला के विभिन्न रूपों एवं निर्माण विधियों का उल्लेख किया गया है। जो मृत्तिका कला के इतिहास को एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करता है। कौशाम्बी में देव मृण्मूर्तियों का प्रारम्भ प्राक्–मौर्य काल से माना जाता है। जो आगे चलकर मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कौशाम्बी में मृण्मूर्ति निर्माण की तीन विधियाँ स्पष्ट रूप से प्रचलित थी[6] –

- हाथ द्वारा डौलिया कर निर्मित मृण्मूर्ति
- हाथ तथा साँचे दोनों के सम्मिलित प्रयोग से निर्मित मृण्मूर्ति
- साँचे से ढालकर निर्मित मृण्मूर्ति

ये तीनों विधियाँ सम्भवतः प्रत्येक कालक्रमों में समान रूप से प्रयुक्त हुई जिसमें मृण्मूर्ति निर्माण में एक नवीन दृष्टिकोण से परिवर्तन हुआ। जिससे मृण्मूर्तियों के बनावट में और भी यथार्थता के रूप में स्पष्ट होने लगे। प्रारम्भ में हाथ द्वारा डौलिया कर बने मृण्मूर्तियाँ एवं खिलौने बेडौल तथा भद्दे बने हैं आगे चलकर जब साँचे का प्रयोग होने लगा तो इन मृण्मूर्तियों में स्वाभाविकता व यथार्थता स्पष्ट रूप से झलकने लगी। कौशाम्बी से प्राप्त गणेश, स्कन्द, सूर्य, कुबेर, यक्ष, नैगमेश आदि देवताओं की मृण्मूर्तियों में निर्माण तकनीक, अलंकृत आभूषण, विविध परिधानों का प्रयोग कर उन्हें लोक जीवन में प्रचलित पुरूष मृण्मूर्तियों से पृथक किया गया।

कौशाम्बी से प्राप्त देव मृण्मूर्तियों तथा उनके कलात्मक स्वरूप का वर्णन इस प्रकार है –

शिव –पशुपति शिव की पूजा अनुमानतः आद्यैतिहासिक काल से प्रचलित है। हड़प्पा संस्कृति के कई स्थलों से शिव के पशुपति एवं लिंग रूप में मिले हैं। शिव से सम्बन्धित मृण्मूर्तियाँ कौशाम्बी, झूंसी, भीटा, श्रावस्ती, मथुरा, अहिच्छत्र आदि से प्राप्त है। कौशाम्बी के शिव के सिर, एकमुखी, शिवलिंग, वृषभारूढ़ शिव को तीनों रूपों[7] में प्राप्त हुए है। कौशाम्बी से प्राप्त शिव की अनेक मृण्मूर्तियाँ भारत में विविध संग्रहालयों में सुरक्षित है। भारत कला भवन, वाराणसी[8] में संग्रहित शिव की वृषभारूढ़ मृण्मूर्ति कलात्मक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। इकहरे साँचे द्वारा निर्मित इस मृण्मूर्ति में शिव के सिर पर जटाजूट, गले में ग्रैवेयक हार एवं कान में आभूषण धारण दिये दिखाया गया है। कमर में तीन लड़मेखला

धारण कर शिव वृषभ पर आसीन है। उनका दाहिना हाथ वृषभ पर है तथा बायाँ हाथ में कुछ लिए हुए ऊपर की ओर उठा है। वृषभ की गर्दन में पाँच घण्टियों की माला तथा मुख व श्रृंग आभूषणों से सज्जित है। पीठ को पुष्प से सजाया गया है। यह मृण्मूर्तियाँ अत्यन्त स्पष्ट एवं अति सुन्दर रूप में अलंकृत है। इसी प्रकार की खण्डित मृण्मूर्ति इलाहाबाद संग्रहालय[9], प्रयागराज में भी संग्रहित है। जिसमें शिव एवं नन्दी का मुख खण्डित अवस्था में है। कौशाम्बी से शिव के अनेक सिर प्राप्त हुए हैं जो सांचे से निर्मित होने के कारण इसे शुंगकालीन माना गया है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो0 जी0आर0 शर्मा संग्रहालय[10] में संग्रहित शिव के सिर पर जटा जूड़ा निर्मित है और शेष बाल मुख के समीप लटक रहे हैं। आँख, कान और नाक स्पष्ट रूप से बने हैं, ओठ तथा उसके नीचे का भाग खण्डित अवस्था में है। इसी प्रकार एक शिव के सिर भारत कला भवन, वाराणसी में संग्रहित है जिसका पीछे का भाग खण्डित है। ललाट के उपरी भाग में फीते का कुछ अंश अवशिष्ट है। मस्तक पर तीसरा नेत्र क्षैतिजाकार है। आंखें, ओठ स्पष्ट बने हैं, नाक कुछ खण्डित है। नथुने एवं पुतली के स्थान पर छिद्र है कान खण्डित अवस्था में है। दाहिने कपोल पर छिद्रों द्वारा दाढ़ी प्रदर्शित की गयी है। क्षैतिजाकार नेत्र के कारण इसे मृण्मूर्ति को कुषाण कालीन कहा गया है। कुषाण काल में शिव के एक मुखलिंग मृण्मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई है जो कलात्मक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है।

गणेश –गणेश शिव एवं पार्वती के पुत्र है। जिन्हें शास्त्रों में ओंकारात्मक माना गया है। कौशाम्बी, राजघाट तथा भीतरगाँव आदि स्थानों से इनकी मृण्मूर्तियाँ प्राप्त होती है। इलाहाबाद संग्रहालय[11] में संग्रहित एक ऐसी ही मृण्मूर्ति गुप्तकालीन प्राप्त है। जो हाथ से डौलिया कर बनी है। यह मृण्मूर्ति बैठी हुई मुद्रा में है जिसका मुख हाथी के समान है बायें हाथ में परशु तथा दायाँ हाथ खण्डित अवस्था में है। गणेश की विधि मृण्मूर्तियाँ अनेक कालक्रमों से प्राप्त हुए हैं जो अपनी कलात्मकता से प्रभावित करती है।

स्कन्द –स्कन्द शिव परिवार के प्रमुख सदस्य है। स्कन्द की अनेक मृण्मूर्तियाँ कौशाम्बी तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्रों से प्राप्त है। प्रो0 जी0आर0 शर्मा संग्रहालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में संग्रहित स्कन्द की मृण्मूर्तियां सर्वाधिक उल्लेखनीय हैं। यहां संग्रहित स्कन्द की एक मृण्मूर्तियाँ इकहरे साँचे से ढाल कर बनी है। इसका रंग ईंट जैसा है। स्कन्द का मुख खण्डित है तथा गले में ग्रैवेयक हार, हाथ में केयूर तथा वलय स्पष्ट रूप से है। दाहिना हाथ मयूर

पर तथा बायां हाथ भी मयूर के समीप है। किन्तु इसका अग्रभाग कम स्पष्ट है। मयूर का सिर, कलंगी, मुख, आंख, पंख तथा पैर अत्यन्त सुडौल है। स्कन्द मोर को गोद में लेकर बैठे हैं। उनके पैर में आभूषण है। फलक का दाहिना भाग खण्डित अवस्था में है और रिक्त स्थान पर पुष्पों का अलंकरण है। यह मृण्मूर्ति कलात्मक रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्कन्द की एक अन्य मृण्मूर्ति इलाहाबाद संग्रहालय[12] में सुरक्षित है। जिसे एक अर्धवृत्ताकार फलक में एक पुरूष मयूर पर बैठा दिखाया गया है। उसके गले में हार, दाहिने हाथ में कुछ पकड़े हुए तथा उसके कन्धे के पीछे पंख जैसा अलंकरण स्पष्ट दिखाई देता है। मयूर का मुख खण्डित है उसका पृष्ठ भाग पंख पैर अत्यन्त स्पष्ट बने हैं। पुरूष के सिर के ऊपरी भाग तथा फलक के रिक्त स्थान, परिधि भाग में अलंकरण है। जिसकी पहचान ऋषिराज त्रिपाठी ने कार्तिकेय से की है। इस प्रकार स्कन्द की अनेक मृण्मूर्तियाँ कौशाम्बी तथा उसके समीपवर्ती स्थलों से प्राप्त है जो कलात्मक दृष्टि से अति उत्तम नमूना माना जाता है।

सूर्य –सूर्य का प्राचीनतम् उल्लेख वैदिक साहित्य में देवता के रूप में मिलता है। अनेक साहित्यिक ग्रन्थों में सूर्य का उल्लेख विभिन्न रूपों में किया गया है। पुरातात्विक दृष्टि से सूर्य का अंकन चार अश्व रथ पर आरूढ़ बोधगया वेदिका में उत्कीर्ण है। प्रारम्भिक कुषाण कला में सूर्य पर्यक ललितासन्न मुद्रा में बैठे दो अश्वों के रथ पर सवार है। उनके बायें हाथ में तलवार तथा दाहिने हाथ में पुष्प है। बाद में कुषाण काल में सूर्य को कुषाण सम्राटों की भांति सिर पर पगड़ी कोट, कमर में पटका, सलवार एवं जूते सहित दिखाया गया है। गुप्त काल से मध्य काल के मध्य सूर्य को रथ में सात अश्वों को दिखाया गया है। मृतिका कला में सूर्य का अंकन कौशाम्बी, मथुरा, अहिच्छत्रा, कदमकुआँ आदि स्थानों से प्राप्त है। कौशाम्बी के घोषिताराम क्षेत्र के उत्खनन से प्राप्त इकहरे साँचे से निर्मित सूर्य का अर्द्ध वृत्ताकार फलक प्राप्त है। प्रो0 जी0आर0 शर्मा संग्रहालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय[13] में संग्रहित सूर्य के मुख में मूछे, शरीर पर कवच, चतुराश्व योजित रथ पर आरूढ़ है। सारथी अरूण के बायें हाथ में घोड़ों की लगाम तथा दाहिने हाथ में रस्सी है। घोड़ों के मुख स्पष्ट है शेष भाग खण्डित अवस्था में है। सूर्य के हाथ में तीर चढ़ा धनुष है। सूर्य के रथ का एक पहिया तथा बैठने का स्थान स्पष्ट है। फलक के चतुर्दिक उत्कीर्ण रेखांकन है तथा पृष्ठ भाग में पुष्पांकन है। इसी तरह के अनेक फलक कौशाम्बी तथा कदमकुआँ से प्राप्त हुआ है। जो अत्यन्त कलात्मक रूप से वर्णित है।

कुबेर –कुबेर का प्राचीनतम् उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। भारतीय साहित्य में कुबेर का उल्लेख धनद एवं यज्ञेश्वर के रूप में हुआ है। कुबेर की अनेक प्रस्तर प्रतिमाएँ भरहुत, मथुरा, कौशाम्बी तथा पालिखेरा आदि स्थानों से मिले हैं। जहां इन्हें उत्तर दिशा में लोकपाल के रूप में उल्लेखित किया गया है। मृत्तिका कला में कुबेर का अंकन, कौशाम्बी, मथुरा, राजघाट तथा अहिच्छत्रा आदि स्थानों[14] से प्राप्त हुआ है। प्रो0 जी0आर0 शर्मा संग्रहालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय[15] में संग्रहित कौशाम्बी के घोषिताराम के उत्खनन से हारीती मन्दिर से गजलक्ष्मी, हारीती मृण्प्रतिमा के साथ कुबेर का सिर प्राप्त हुआ है। सांचे से निर्मित यह कुषाण कालीन है। कुबेर के सिर पर अलंकृत किरीट, उत्कीर्ण रेखाओं एवं मोतियों से सजा हुआ है। भौहें एवं आंखें उत्कीर्ण है। ओंठ, नाक एवं कान स्पष्ट रूप से है। ओठ के ऊपरी भाग में रेखाओं द्वारा मूंछे बनी है। कुबेर की यह मृण्मूर्ति विष्णुधर्मोत्तर पुराण में वर्णित कर्तव्यश्मश्रुधारिणः तथा वामेन विनता कार्यामौलिः के अनुरूप ही है। कौशाम्बी के राज प्रासाद क्षेत्र के उत्खनन से गदाधारी कुबेर की मृण्मूर्ति मिली है। सिर पर किरीट, गले में ग्रैवेयक हार तथा दायें हाथ में गदा लिए हुए हैं। बायां हाथ एवं पैर खण्डित अवस्था में है। कौशाम्बी से गुप्तकालीन लम्बोदर कुबेर की मृण्मूर्तियाँ भी प्राप्त हैं जो अत्यन्त सुन्दर बनी है।

यक्ष –यक्ष का प्राचीनतम् उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। भारतीय साहित्य में यक्ष का उल्लेख देवयोनि के रूप में हुआ है। कौशाम्बी से प्राप्त यक्ष मूर्तियाँ प्रथम शती ई0पू0 से लेकर द्वितीय शती ई0 के मध्य की है। कौशाम्बी से प्राप्त सभी यक्ष मृण्मूर्तियाँ सांचे में ढालकर निर्मित है। इलाहाबाद संग्रहालय[16] में संग्रहित यक्ष की मृण्मूर्ति प्रथम शती ई0पू0 की उल्लेखनीय है। इस मृण्मूर्ति का शिरोभूषा पुष्पालंकृत है। उसका मुख विकृत, बड़ा एवं झुर्रियोंदार है। वह दांत पीसता हुआ अंकित है, पेट तुण्डिल है नाभि भी स्पष्ट है। अधोभाग में धोती पहने तथा हाथ में वलय पहने अंकित है। दोनां हाथों से कन्धे पर बैठे पुरूष की टांगों को पकड़े हुए हैं, कन्धे पर बैठे पुरूष के मात्र पैर ही है। इसी प्रकार की एक यक्ष मृणमूर्ति लखनऊ संग्रहालय में सुरक्षित है जिसका समय शुंगकालीन है। यक्ष के सिर पर सुन्दर मुकुट है उसका मुख, दांत भी स्पष्ट है। दाहिने हाथ में हैमर (फरसा) है जिसे वह बायें हाथ से पकड़े पशु पर चलाता हुआ अंकित है। इस प्रकार के यक्षों की अनेक मृण्मूर्तियाँ कौशाम्बी से प्राप्त हैं। कौशाम्बी में एक विशेष प्रकार के यक्ष मृण्मूर्तियाँ प्राप्त है जिसमें यक्ष को पशुभक्षी के रूप में दिखाया

गया है जो कलात्मक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है।

नैगमेश – प्राचीन भारतीय मृण्मूर्ति कला में एक विशिष्ट प्रकार की मृण्मूर्ति मिलती है। जिनमें मुख बकरे के आकार का तथा शेष भाग पुरूष या स्त्री का होता है। नैगमेश का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद परिशिष्ट एवं ग्रहय सूत्रों में नेजमेष के रूप में मिलता[17] है। जैन तथा ब्राह्मण धर्मों में नैगमेश की पूजा सन्तान कामना हेतु किया जाता था। जिसके प्रमाण मथुरा, कुमराहार, राजघाट, कौशाम्बी, वैशाली आदि स्थानों से प्राप्त है। कौशाम्बी से प्राप्त नैगमेश मृण्मूर्तियाँ प्रथम शती ई0पू0 से चतुर्थ शती ई0 के स्तरों से प्राप्त है। यहां से स्त्री नैगमेशी तथा पुरूष नैगमेश दोनों ही प्रकार प्राप्त होते है। जिनका निर्माण हाथ से डौलिया कर तथा सांचे से ढालकर किया गया है। कौशाम्बी की नैगमेश मूर्तियों को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा गया है।[18]

- नैगमेश सिर
- स्त्री नैगमेश मूर्ति आवक्ष एवं पूर्ण
- पुरूष नैगमेश

कौशाम्बी के अशोक स्तम्भ क्षेत्र से प्राप्त पुरूष नैगमेश सिर[19] जिसके ऊपरी उठे भाग में एक छिद्र है तथा इसके कान लम्बे बने हैं, मध्य भाग में कान गहरा है और मुख मानव का है। गर्दन के नीचे खण्डित प्राप्त इस मृण्मूर्ति को हाथ से डौलियां कर बनाया गया है। इसी प्रकार के अनेक सिर कौशाम्बी के विभिन्न क्षेत्रों से मिले है। इलाहाबाद संग्रहालय में संग्रहित पुरूष नैगमेश की आवक्ष प्रतिमा[20] के हाथ स्पष्ट है तथा बायां कान व कमर के नीचे के भाग खण्डित अवस्था में है। इसी प्रकार से कौशाम्बी से प्राप्त नैगमेश मृण्मूर्तियाँ अनेक संग्रहालयों में संग्रहित है। जिसमें कुछ मूर्तियाँ अजमुखी तथा कुछ मानव मुखी रूप में है। जिनको विभिन्न कलात्मक आभूषणों से सजाया गया है। मानवमुखी नैगमेश के शिरोभूषा में छिद्र बने हैं जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इन मूर्तियों को टांगकर पूजा की जाती रही होगी।

किन्नर मिथुन – भारतीय साहित्य में किन्नर का उल्लेख संगीतप्रिय जाति के रूप में हुआ है। मृत्तिका कला में किन्नर मिथुन फलक की प्राप्ति कौशाम्बी तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्रों से हुआ है। जिसमें राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली[21] में सुरक्षित एक वृत्ताकार फलक में हय विग्रह किन्नरी के पृष्ठ भाग पर किन्नर तथा एक अन्य व्यक्ति सवार है। किन्नरी की शिरोभूषा कुण्डल ग्रैवेयक तथा मुख्य स्पष्ट है। किन्नरी का दाहिना हाथ किन्नर के कन्धे पर है। दोनों आलिंगन मुद्रा में दिखाएँ गए है, जो अत्यन्त सुन्दर अलंकृत है। ऊपरी भाग में टांगने के लिए चुल्ला भी

बना है। इस मृण्मूर्ति फलक का निर्माण इकहरे सांचे में ढालकर किया गया है।

सपक्ष मृण्मूर्तियाँ – द्वितीय शती ईसा पूर्व से प्रथम शती ई0पू0 के मृत्फलकों में एक नवीन विषय का अंकन होना प्रारम्भ हुआ। कौशाम्बी, मथुरा व तामलुक से प्राप्त फलकों पर पुरूष का अंकन विभिन्न रूपों व आभूषणों से युक्त दिखाया गया है जिसे वासुदेव शरण अग्रवाल ने सपक्ष पुरूष को कामदेव के रूप में माना है।[22] कौशाम्बी में घोषिताराम क्षेत्र से प्राप्त, इकहरे सांचे से निर्मित एक फलक पर आवक्ष पुरूष का अंकन है। जिसके सिर पर पगड़ी जैसी शिरोभूषा अलंकृत है। मस्तक पर केश, कानों में कुण्डल, गले में ग्रैवेयक हार, बायें हाथ में केयूर स्पष्ट है। पुरूष का वाम स्कन्ध वक्राकार पक्ष से युक्त है। दाहिना हाथ तथा बायें हाथ का अधिकांश भाग खण्डित है। फलक के बाहरी भाग में मोतियों एवं पुष्पों की सज्जा है। ऊपरी हिस्से में टांगने हेतु छिद्र है। यह मृण्मूर्ति इलाहाबाद संग्रहालय में संग्रहित है। यह फलक मूर्ति अत्यन्त कलात्मक रूप से उत्कीर्ण की गई है। अशोक स्तम्भ क्षेत्र से एक अन्य प्रकार का सपक्ष पुरूषाकृति प्राप्त हुई है जिसमें पुरूष के सिर पर पगड़ी, कान में आभूषण गले में ग्रैवेयक हार, हाथ में वलय, शरीर पर उत्तरीय तथा कन्धे पक्षयुक्त दिखाये गये हैं। ये पंख वक्राकार न होकर सीधे है। पुरूष का बायां हाथ कमर पर तथा दाहिना हाथ नीचे है, जो सम्भवतः वीणा लिए हुए है। अधोभाग में धोती पहने है। दाहिना पंख ऊपर से कुछ खण्डित है। प्रो0 जी0आर0 शर्मा ने इसकी पहचान यक्ष[23] से की है किन्तु यह युक्तिसंगत नहीं प्रतीत होती है। यह सम्भवतः गंधर्व के रूप में ज्यादा स्पष्ट प्रतीत होता है।

देव तथा देवी मृण्मूर्तियों में कलात्मक समानता

सौन्दर्य प्रसाधन	देव मृण्मूर्तियाँ	देवी मृण्मूर्तियाँ
शिरोभूषा	अलंकृत एव सादी पगड़ी, अलंकृत मुकुटनुमा शिरोभूषा एवं टोपी।	मस्तक पर मोतियों की सज्जा, अलंकृत मुकुटनुमा शिरोभूषा एवं पाँच प्रतीकों का अंकन, अलंकृत पगड़ी एवं टोपी
केश विन्यास	रेखाओं से युक्त अलंकृत जूड़ा, घुंघराले बाल, पट्टियों के द्वारा बने जटाजूट, पीछे की तरफ काढे	अलंकृत जूड़ा फूलों व मोतियों से सज्जित केश, कन्धे तक लटकते खुले केश तथा चोटी।

	गये केश इत्यादि।	
कर्णाभूषण	अलंकृत वृत्ताकार कुण्डल, अर्द्ध चन्द्राकार, चक्राकार एवं लम्बी लटकती बालियाँ आदि।	अलंकृत वृत्ताकार, चक्राकार, अर्द्धचन्द्राकार, गोल कर्णाभूषण, मोतियों का झूमका एवं विविध प्रकार के अलंकृत कर्णाभूषण इत्यादि।
ग्रीवा के आभूषण	गले से सटा अलंकृत ग्रैवेयक हार तथा वक्षस्थल तक लम्बा	गले में अलंकृत ग्रैवेयक एवं मोतियों का लम्बा हार
हाथ, पैर एवं कमर के आभूषण	हाथ में अलंकृत वलय, पैरों में चौड़े पायल और कमर में अलंकृत मेखला, भुजाओं पर अलंकृत केयूर	हाथ में केयूर एवं चूड़ियाँ, पैर में अलंकृत पायल, कमर में मेखला आदि।
परिधान	गले में स्कार्फ उत्तरीय एवं अधोभाग में मेखला से बंधी घुटनों तक अलंकृत धोती तथा बिना बांह का पैरों तक पारदर्शी वस्त्र, रेखाओं द्वारा चित्रित उत्तरीय आदि।	ऊपरी भाग में उत्तरीय तथा अधोभाग में अलंकृत साड़ी भाग।

निष्कर्ष

उपरोक्त समस्त कलात्मक पुरावशेषों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि कौशाम्बी में इन देवताओं का प्रचलन बहुतायत रूप में था। देव मृण्मूर्तियों में जो अलंकरण विधान को अपनाया गया, वह सम्भवतः समस्त देवी–देवताओं की मृण्मूर्तियों में समान रूप से रहा। प्राचीन काल में जो प्रतीक चिह्न इन देव मृण्मूर्तियों में दिखाएं गए, वे आज भी उन्हीं रूपों में प्रचलित है। कौशाम्बी से प्राप्त इन देव मृण्मूर्तियों के माध्यम से हम उस समय के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इन मृण्मूर्तियों को कलात्मक रूप देने के लिए विविध प्रकार के केश विन्यास, शिरोभूषा, कर्णाभूषण, ग्रीवा, आभूषण आदि का प्रयोग किया गया है। देव मृण्मूर्तियों का देवी मृण्मूर्तियों से तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि प्राचीन समय में देवी तथा देवताओं की मृण्मूर्तियों में कलात्मक रूप से अनेक समानताएँ रही जो उस समय लोक जीवन के अधिक निकटता को स्पष्ट करती है।

कौशाम्बी से प्राप्त देव मृण्मूर्तियाँ काफी ज्यादा अलंकृत थी तथा देवी मृण्मूर्तियों की तरह देव मृण्मूर्तियों को भी सौन्दर्यता प्रदान करने के लिए विविध प्रकार के प्रसाधनों से विभूषित किया गया था। विभिन्न देवताओं को उनके अलंकृत वेशभूषा के माध्यम से विभिन्नता स्पष्ट की जा सकी है। जो उनके कलात्मक रूप को और भी महत्वपूर्ण बनाते हैं। कौशाम्बी के मृण्मूर्ति कला का विकास में कौशाम्बी से गुजरने वाले व्यापारिक मार्गों का विशेष योगदान रहा जिससे कौशाम्बी मृण्मूर्ति का कला प्रधान केन्द्र बना। लोक जीवन के अधिक निकट होने के कारण यह कला कई सदियों तक लोकप्रिय माध्यम बनी रही। यहाँ से प्राप्त विविध कलात्मक पुरावशेषों के कारण अनेक कलाविदों ने यहाँ की कला को स्वतंत्र कला शैली मानते हुए ''कौशाम्बी कला शैली'' (Kaushambi School of Arts) की संज्ञा प्रदान की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. ए0एम0आई0ए0आर0 भाग 1, 1871 पृ0 303—304
2. शर्मा, जी0आर0 (1969) — एक्सकेवेशन ऐट कौशाम्बी 1949—50, मेमोयर्स ऑफ आर्कियोलॉजी सर्वे ऑफ इण्डिया (नं0 74) मैनेजर पब्लिकेशन्स दिल्ली।
3. शर्मा, जी0आर0 (1980) — हिस्ट्री टू प्री हिस्ट्री, प्राचीन इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, पृ0 7
4. काला, सतीश चन्द्र (1972) — भारतीय मृत्तिका कला, प्रतीक प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 6
5. महाभारत, आदि पर्व, 123/12
6. शर्मा, जी0आर0 (1969) — एक्सकेवेशन ऐट कौशाम्बी 1949—50, मेमोयर्स ऑफ आर्कियोलॉजी सर्वे ऑफ इण्डिया (नं0 74) मैनेजर पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
7. मिश्रा, विभा (2005) — कौशाम्बी की मृण्मूर्तियां, मोती लाल बनारसी दास पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद पृ0 158
8. भारत कला भवन, बी0एच0यू0 वाराणसी — संख्या 22579
9. इलाहाबाद संग्रहालय, प्रयागराज — संख्या 4414
10. जी0आर0 शर्मा मेमोरियल म्यूजियम — प्राचीन इतिहास विभाग, इ0वि0वि0 सं0 डी/62

11. काला, सतीश चन्द्र (1950) – टेराकोआ इन द इलाहाबाद म्यूजियम, अभिनव प्रकाशन इलाहाबाद, चित्र 299 सं0 1235

12. त्रिपाठी, ऋषिराज (1984) – मास्टर पीसेज इन द इलाहाबाद म्यूजियम पृ0 31 चित्र सं0 43, इलाहाबाद संग्रहालय ए0एम0 5398

13. जी0आर0 शर्मा मेमोरियल म्यूजियम – प्राचीन इतिहास विभाग, इ0वि0वि0 LSVIII.5

14. गुप्ता, परमेश्वरी लाल (1972) – गैजेटिक वैली टेराकोटा आर्ट, पृथ्वी प्रकाशन वाराणसी, पृ0 91

15. जी0आर0 शर्मा मेमोरियल म्यूजियम, प्राचीन इतिहास विभाग, इ0वि0वि0 सं0 517

16. इलाहाबाद संग्रहालय, प्रयागराज संख्या 439

17. अग्रवाल पी0के0 (1967) – स्कन्द कार्तिकेय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृ0 51–52

18. मिश्रा, विभा – कौशाम्बी मृण्मूर्तियाँ, मोती लाल बनारसी दास पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद पृ0 146

19. शर्मा, जी0आर0 (1969) – एक्सकेवेशन एट कौशाम्बी 1949–50 प्लेट XXI XB2

20. इलाहाबाद संग्रहालय, प्रयागराज संख्या 2938

21. दिल्ली संग्रहालय, नई दिल्ली संख्या – 67, 142

22. अग्रवाल, वासुदेव शरण (1966) – भारतीय कला पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी, पृ0 324

23 एम0ए0एस0आई0 संख्या 74, चित्र 25 B1